अठारहवीं शताब्दी नेपाल एवं भारत नेपाल संबंध के विविध परिप्रेक्ष्य

बीज शब्द : *भारत नेपाल संबंध, आधुनिक नेपाल, स्थलबद्ध राज्य, आंग्ल-नेपाल युद्ध, नेपाल में गृह युद्ध, नेपाल में जन आन्दोलन, नेपाली संविधान सभा का गठन*

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

आधुनिक नेपाल की स्थापना पृथ्वीनारायण शाह ने 1768 में की थी। उन्होंने नेपाल का सीमा विस्तार कर इसे अखण्ड स्वरूप प्रदान किया। कालान्तर में नेपाल में विभिन्न राजनैतिक परिवर्तन होते रहे हैं। यह शोध आलेख इन परिवर्तनों का लेख-जोखा प्रस्तुत करते हुए नेपाल की पुनर्संरचना एवं स्थायित्व को भारत के हितों की सुरक्षा के लिये अनिवार्य सिद्ध करता है।

अजय कुमार सिंह
स्वतंत्र शोध अध्येता,
क्यू-१३३ रिजर्व पुलिस लाईन,
गोरखपुर।

दक्षिण एशिया में हिमालयी राज्य के रूप में नेपाल सदैव अपनी प्राकृतिक सुंदरता और शांत प्रकृति के कारण आकर्षण का केन्द्र बना रहा है। भू-राजनीतिक दृष्टिकोण से यह एक स्थलबद्ध राज्य है जिसके उत्तर में चीन तथा दक्षिण में भारत अवस्थित है। भारत और चीन की प्रतिस्पर्धा अथवा बड़ी शक्तियों के रूप में उनके उदय ने नेपाल को और भी महत्वपूर्ण बना दिया है। नेपाल एक बहु-सांस्कृतिक, बहु-भाषी तथा बहु धार्मिक राज्य हैं, जहाँ भौगोलिक विविधता भी विद्यमान है। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में आर्द्र तराई तक नेपाल पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है।

नेपाल के आधुनिक राज्य की स्थापना 21 दिसम्बर, 1768 को तब हुई थी जब पृथ्वी नारायण शाह ने नेपाल का एकीकरण कर राजतंत्र की स्थापना की। गोरखा राज्य की स्थापना के बाद नारायण शाह ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन छोटे सामंतवादी राज्यों पर विजय हासिल कर अपने राज्य को नेपाल का नया नाम दिया। 1773 में चौडण्डी तथा उसके तत्काल बाद विजयपुर पर विजय हासिल करने के बाद अन्तत: 1768 में नेपाल के राजतंत्र की विधिवत स्थापना की गई। नेपाल की राजशाही का विस्तार पूर्व में तिस्ता नदी से पश्चिम में सतलज नदी के पार कांगड़ा तक था। पहाड़ी देशों पर आधिपत्य के विषय पर नेपाल और तिब्बत के बीच संघर्षों के दौरान नेपाल की सेना को पीछे हटना पड़ा था। इस बीच ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा नेपाल के सीमावर्ती राज्यों पर विजय हासिल करने की मंशा ने नेपाल और कंपनी के बीच शत्रुता उत्पन्न कर दी थी। इस शत्रुता की पराकाष्ठा 1815-16 में आंग्ल-नेपाल युद्ध में देखी गई। हालांकि नेपाल में गोरखाओं ने अत्यधिक साहस का परिचय दिया। लेकिन सुगौली की संधि के बाद इसकी समाप्ति हुई। इस संधि के तहत तराई के कुछ क्षेत्रों तथा सिक्किम के क्षेत्र को ब्रिटिश कंपनी को सौंप दिया गया। नेपाल की राजशाही में 1846 में तब अस्थायित्व आ गया जब कई प्रकार के षडयंत्रों की जानकारी मिली। आपसी संघर्षों का लाभ उठाकर जंग बहादुर राणा ने राणा वंश की स्थापना की। व्यक्तिगत स्तर पर राणा वंश ब्रिटिश साम्राज्य का समर्थक था। इस कारण 1857 में भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम तथा उसके बाद दोनों विश्व युद्धों में नेपाल ने ब्रिटिश साम्राज्य को समर्थन दिया था। 1923 में ब्रिटेन तथा नेपाल के बीच एक मित्रता संधि की गई। तथा ब्रिटेन ने नेपाल को एक स्वतंत्र राज्य के रूप में मान्यता दे दी। अन्तत: नेपाल में 1924 में दास-प्रथा समाप्त कर दी गई। नेपाल के इतिहास में 1940 का दशक इस रूप में महत्वपूर्ण रहा

कि इस अवधि में लोकतंत्र के समर्थन में आंदोलन हुए जिसके फलस्वरूप राणा वंश को गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इसके उपरांत 1950 के दशक में जब चीन का प्रभुत्व तिब्बत में बढ़ रहा था, तब भारत ने सैन्य प्रभावों को संतुलित करने की दृष्टि से नेपाल के नए शासक त्रिभुवन (1951) को अपना समर्थन दिया। भारतीय प्रयासों के फलस्वरूप नेपाल की राजशाही पर राणा वंश का प्रभुत्व समाप्त हो गया। नेपाल में नरेश तथा सरकार के बीच सत्ता संघर्ष के कारण नरेश ने 1959 में लोकतांत्रिक परंपराओं को समाप्त कर शासन के लिए दल-रहित 'पंचायत' प्रणाली का गठन किया। यह प्रणाली 1989 तक लागू रही जब 'जन आंदोलन' के तहत संवैधानिक सुधारों की मांग की जाने लगी। इन मांगों और बढ़ते जन आंदोलन के फलस्वरूप 1991 में एक बहुदलीय संसद की नींव रखी गई।

नेपाल में गृह युद्ध-

1990 में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (सूनिटी सेन्टर) की स्थापना की गई थी। 1991 में पार्टी ने अपने पहले सम्मेलन में लोकतांत्रिक क्रांति के लिए सशस्त्र संघर्ष करने की शपथ ली। यह भी तय किया गया कि क्रांति के दौरान पार्टी भूमिगत होकर कार्य करेगी। साथ ही, पार्टी ने संयुक्त जनमोर्चा के नाम से एक राजनीतिक इकाई की स्थापना की, जिसके अध्यक्ष बाबूराम भट्टाराई थे। 1991 के चुनावों में संयुक्त जन मोर्चा नेपाल की राजनीति में तीसरी बड़ी शक्ति के रूप में उभर कर सामने आया। 1994 में कम्युनिस्ट पार्टी तथा संयुक्त जन मोर्चा दो भागो में बँट गया तथा नए सशस्त्र दल का नाम कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (माओवादी) रखा गया। माओवादियों ने सरकारी शक्तियों को सामंतवादी शक्तियों का नाम दिया। माओवादियों ने राजतंत्र को समाप्त करने की शपथ ली। इसके तत्काल बाद दूरस्थ क्षेत्रों में सशस्त्र संघर्ष का आरंभ हो गया। आरंभिक चरणों में सरकार ने पुलिस प्रशासन को दृढ़ता के साथ उग्रवादी गतिविधियों पर अंकुश रखने के लिए तैनात किया। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि नेपाल की शाही सेना इस कार्य में संलग्न नहीं थी, क्योंकि इसे सरकार का दायित्व माना गया था। यह नरेश और सरकार के बीच वैचारिक संघर्ष को सुदृढ़ बनाने वाला एक घटनाक्रम था। इस कारण प्रधानमंत्री ने त्यागपत्र देकर अपना विरोध प्रकट किया। 1996 में माओवादियों ने शाही सत्ता के अधीन कार्यरत संसद को विघटित करने की पहल के तहत अपने सशस्त्र संघर्ष को तेज कर दिया। यह लक्ष्य रखा गया कि नेपाल को एक समाजवादी गणतंत्र के रूप में स्थापित किया जाएगा। आंदोलन को तब और गति मिल गई, जब 2001 में नेपाल नरेश वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव तथा उनके परिवार की हत्या कर दी गई। नेपाल में माओवादियों की विचारधारा चीनी नेता माओ जेडांग प्रेरित रही है तथा उन्होंने अपनी कार्य प्रणाली पेरू के संगठन शाइनिंग पाथ की भांति गुरिल्ला युद्ध की बनाई है। वास्तव में 2002 के बाद नेपाल में खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में माओवादियों की पकड़ इतनी मजबूत हो चुकी थी कि उन पर सरकारी नियंत्रण लगभग नहीं के बराबर था। अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए माओवादियों ने नए नेपाल नरेश ज्ञानेन्द्र के समक्ष गंभीर चुनौतियां उत्पन्न कर दीं। शाही सेना को उन पर नियंत्रण रखने के लिए तैनात अवश्य किया गया था, लेकिन समस्या दिनों-दिन गंभीर होती गई। आंकड़ों के अनुसार, लगभग एक दशक तक चले गृह-युद्ध में बारह हजार से भी अधिक लोग मारे गए। नेपाल नरेश ने 2005 में देउबा सरकार को अपदस्थ कर जैसे ही सत्ता की कमान पूरी तरह अपने हाथों में ली, माओवादियों की गतिविधियां और तेज हो गई। नरेश ने सरकार को अपदस्थ किए जाने का मुख्य तर्क यह दिया कि शेर बहादुर देउबा के नेतृत्व में सरकार माओवादियों पर अंकुश रख पाने तथा 2005 के पूर्वार्द्ध तक शांति वार्ता आरंभ करने में पूरी तरह विफल हो गई थी। एक नाटकीय घटनाक्रम में माओवादियों ने सितम्बर, 2005 में तीन माह के लिए एकपक्षीय युद्धविराम की घोषणा कर दी। दूसरा नाटकीय घटनाक्रम तब हुआ जब नरेश ने संसद को पुन: स्थापित कर दिया। निश्चित रूप से नरेश द्वारा यह निर्णय अन्तर्राष्ट्रीय दबाव के तहत लिया गया था। 18 मई, 2006 को नेपाल की संसद ने एक ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित कर नेपाल को एक पंथ निरपेक्ष राज्य घोषित करने के साथ-साथ यह भी घोषित किया कि नरेश की शक्तियों को सीमित किया जाएगा। अप्रैल, 2006 में अंतरिम सरकार की स्थापना के जो प्रयास आरंभ किए गए थे। उसी क्रम में सरकार और माओवादियों के बीच शांति वार्ताएँ की गईं तथा एक ऐतिहासिक समझौता किया गया। अन्तत: माओवादियों ने अप्रैल, 2007 में अंतरिम सरकार में शामिल होकर एक दशक के गृह युद्ध को समाप्त कर दिया। इस समय प्रतिनिधि सभा में सीटों की संख्याा बढ़ाकर 330 कर दी गई।

नई संविधान सभा के गठन के बाद अप्रैल, 2008 में चुनाव कराए गए थे जिसमें सबसे बड़े दल के रूप में कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (माओवादी) उभरी तथा उसके प्रमुख पुष्प कमल दहल उर्फ प्रचण्ड का देश के सबसे शक्तिशाली नेता के रूप में उदय हुआ। नेपाल के लगभग 240 वर्षों में इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण घटनाक्रम 28 मई, 2008 को हुआ जब नेपाल की संसद ने एक प्रस्ताव पारित कर राजशाही की समाप्ति की घोषणा की तथा नेपाल को एक गणराज्य के रूप में स्थापित कर दिया। जहाँ तक नेपाल में गृह युद्ध की तार्किकता का प्रश्न है, यह कहा जा सकता है कि माओवादी संघर्ष न तो पूर्ण रूप से वैचारिक और न ही पूर्णत: नृजातीय संघर्ष था। वैचारिक संघर्ष के लिए यह

अनिवार्य था कि विचारों की भिन्नता के कारण माओवादी सरकार शामिल में नहीं हों, लेकिन समय-समय पर माओवादियों के व्यवहार से यह सिद्ध होता रहा कि वे समझौता चाहते थे, ताकि उन्हें उनके मापदंडों पर सत्ता में आने का अवसर मिले। निश्चित रूप से इसे नृजातीय संघर्ष भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसमें कोई भी विशिष्ट नृजातीय समुदाय अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने के लिए शामिल नहीं था। इस संघर्ष को वास्तविक अर्थों में राजनीति प्रकृति का माना जाना चाहिए, जिसका मुख्य कारण नेपाल की सत्ता की कमजोरियां तथा व्यवस्था बनाए रखने में राजनीतिक अस्थायित्व के कारण हुई विफलता थी। माओवादियों का उदय सामंतवादी मानसिकता के विरोधियों के रूप में हुआ अवश्य था लेकिन उनके राजनीतिकरण की उपयुक्त पृष्ठभूमि तैयार करने में राजशाही की ताकतों में हुई कमी और लोकतांत्रिक सरकारों की विफलता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी का लाभ उठाते हुए माओवादियों ने अपने को लोकतंत्र के रक्षक के रूप में स्थापित करने में सफलता प्राप्त कर ली। नेपाल के गृह युद्ध को समाप्त करने अथवा सभी राजनीतिक और गैर-राजनीतिक ताकतों को एकजुट करने में हुई विफलता ने नेपाल में लोकतंत्र के नए ढाँचे के निर्माण के बाद भी एक अनिश्चित्ता की स्थिति बना रखी है। गणराज्य की घोषणा के बाद भी सत्ता संघर्ष बना हुआ है। इसी क्रम में 26 जून, 2008 को प्रधानमंत्री गिरजा प्रसाद कोइराला ने अपने पद से त्यागपत्र इस कारण दिया कि माओवादी सदस्यों का यह आरोप था कि अब कोइराला प्रधानमंत्री के रूप में उपयुक्त व्यक्ति सिद्ध नहीं हो पा रहे थे। यह भी कहना गलत नहीं होगा कि जिस सशस्त्र संघर्ष की बुनियाद पर प्रचण्ड के नेतृत्व में सत्ता बदलने के लिए जो आंदोलन किया गया उससे अलग हटकर माओवादियों को शांति स्थापना और संघर्ष की राजनीति छोड़ने में कठिनाई होगी। यहाँ एक प्रश्न भी विचारणीय है कि क्या यह उनके लिए अस्तिव का संकट खड़ा नहीं करेगा। बहरहाल, विश्व के सबसे नए गणराज्य के समक्ष विकास और शांति स्थापना तथा लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा की गंभीर चुनौतियाँ विद्यमान हैं। ऐसे में कम्युनिस्ट किसी एक विचारधारा के बदले ससूहवादी दृष्टिकोण अपनाकर ही कार्य करना होगा, ताकि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में एक गणराज्य के रूप में नेपाल की अपनी पहचान बना सके। पुष्प कमल दहल उर्फ 'प्रचण्ड' के प्रधानमंत्री बन जाने के बाद यह आशा की जा सकती है कि सत्ता में परिवर्तन के उद्देश्य की प्राप्ति के बाद नेपाल में शांति स्थापित होगी।

भारत-नेपाल संबंध-

भारत-नेपाल संबंधों को निर्देशित करने में उनकी भौगोलिक निकटता, सामाजिक-सांस्कृतिक संबद्धता तथा सुरक्षा संबंध विषयों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, लेकिन वस्तुस्थिति नहीं मिल पाई। जब ब्रिटिश साम्राज्य ने नेपाल को 1923 में एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता दी थी तब भारतीयों को नेपाल के तराई क्षेत्र में व्यापार की अनुमति भी दी गई थी। इसने बड़ी संख्या में भारतीय व्यापारियों को नेपाल में बसने के लिए प्रेरित किया। इसी प्रकार, नेपाल से भी जन समुदाय का भारत में मुख्यत: रोजगार के लिए देशांतरण होता रहा था। दूसरी ओर, जब चीन ने भारत में रह रहे नेपालियों को तिब्बत में व्यापार की स्वतंत्रता दे दी तथा यह देशांतर और भी तेज हो गया था। इन परिस्थितियों में दोनों देश एक-दूसरे के समीप आ गए थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद भारत ने नेपाल के साथ संबंधों की स्थापना को अधिक महत्व नहीं दिया था, क्योंकि भारत में आंतरिक समस्याएँ विद्यमान थीं जो मुख्यत: शीत युद्ध के आरंभ के साथ ही उत्पन्न हो गई थीं, लेकिन चीन द्वारा तिब्बत पर आधिपत्य स्थापित करने के लिए रखे गए विचारों को देखते हुए भारत के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह नेपाल के साथ मधुर संबंध बनाने का प्रयास करे। इसी पृष्ठभूमि में 1950 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने नेपाल के तत्कालीन शासक राणा के साथ मिलकर यह प्रयास किया कि अन्तर्राष्ट्रीय बहिष्कार से नेपाल को बचाया जा सके तथा उसकी अलोकतांत्रिक राजव्यवस्था को रूपांतरित किया जा सके। इसी संदर्भ में 1950 में भारत-नेपाल शांति एवं मित्रता संधि की गई। इसकी प्रेरणा 1923 के नेपाल-ब्रिटेन संधि से प्राप्त की गई थी। संधि के अनुच्छेद 5 में सुरक्षा उपकरणों तथा सैन्य युक्तियों के भारत से आयात की अनुमति नेपाल को प्रदान की गई। संधि में यह भी प्रावधान किया गया कि दोनों देशों के बीच आपसी संबंधो में सुधार के लिए लोगों के आवागमन की प्रक्रिया को भी सरल बनाया जाएगा। नेपाल के संबंध को 1825 की सुगौली की संधि द्वारा निर्देशित किया जाता था, लेकिन 1949 में चीन के जनवादी गणतंत्र की स्थापना तथा उसके द्वारा तिब्बत पर आक्रमण ने भारत और नेपाल, दोनों के लिए ही सुरक्षा संबंधी विषयों को महत्वपूर्ण बना दिया था। एक ओर भारत और तिब्बत के संबंधों तथा चीन के साथ सीमाओं की साझेदारी के कारण समस्याएं थीं जबकि दूसरी ओर, नेपाल के शासकों को यह आशंका थी कि चीन नेपाल में साम्यवाद के विस्तार से उनकी सत्ता को चुनौती दे सकता था। इन चुनौतियों ने भारत-नेपाल शांति और मित्रता संधि की आधारशिला रखी। संधि में दोनों देशों ने मुक्त सीमा पर सहमति जताई तथा यह तय किया कि न केवल सीमा के दोनों ओर लोगों का प्रतिबंध-रहित आवागमन सुनिश्चित किया जाएगा, बल्कि उन्हें समान अधिकार भी प्राप्त होंगे। यह भी प्रावधान था कि दोनों देश सामरिक मुद्दों पर आपसी चर्चा कर क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए संयुक्त प्रयास करेंगे। आरंभिक चरणों में तो यह प्रतीत

हुआ कि दोनों देशों के संबंध प्रगाढ़ बनेंगे, लेकिन नेपाल के लोगों में इस संधि के प्रति विरोध की भावना उत्पन्न हो गई। इसका मुख्य कारण यह था कि उन्होंने इस संधि को उनकी संप्रभुता पर चोट करने वाला एक उपकरण माना तथा यह महसूस किया कि यह नेपाल में भारत के अनावश्यक हस्तक्षेप को बढ़ावा दे रहा है। 1952 में जब साम्यवादियों द्वारा सत्ता पर अधिकार करने का प्रयास विफल हो गया था तब भारत और नेपाल ने सुरक्षा विषयों पर संबंधों को और सुदृढ़ बनाने की कोशिश की। भारत ने अपनी ओर से एक सैन्य मिशन भी नेपाल भेजा, लेकिन भारत के इस कदम को भी हस्तक्षेप माना गया। 1950 के दशक के उत्तरार्द्ध से नेपाल और चीन के संबंधों में सुधार ने भारत-नेपाल संबंधों को कमजोर कर दिया।

1962 में भारत-चीन युद्ध के बाद नेपाल के भारत के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण ने भारत-नेपाल संबंधों को पुन: परिभाषित करने की आवश्यकता उत्पन्न कर दी। भारत ने अपनी नेपाल नीति में प्रतिरक्षा संबंधों को प्राथमिकता दी थी, लेकिन नेपाल द्वारा इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिए जाने के बाद पुन: दोनों देशों के संबंधों में कटुता आ गई। इसी प्रकार, 1965 में भारत युद्ध में भी नेपाल ने भारत को समर्थन देना अस्वीकार कर दिया था। संबंधों में आई कटुता के बावजूद 1970 का दशक महत्वपूर्ण माना जा सकता है, क्योंकि यह अवधि व्यापारिक संबंधों की स्थापना की अवधि कही जा सकती है। मार्च तथा अप्रैल, 1978 में दोनों देशों के बीच व्यापार एवं पारगमन संधियाँ की गई। इसी संधि के तहत भारत ने नेपाल को 12.45 करोड़ रूपये की वित्तीय सहायता के अतिरिक्त चंद्रा नहर परियोजना को लागू करने में भी सहायता देने का आश्वासन दिया। इसी प्रकार, नेपाल में पश्चिमी कोसी नहर निर्माण के लिए भी सहमति व्यक्त की गई। देशांतरण के संबंध में नेपाल ने 1983 में जनसंख्या आयोग का गठन किया। आयोग ने सीमा पार होने वाले आवागमन और देशांतरण का अध्ययन कर 1988 में अपनी रिपोर्ट सौंपी। रिपोर्ट में तीन चरणों में ऐसे देशांतरण पर रोक लगाने का सुझाव दिया गया था। पहले चरण में दोनों देशों के सीमा क्षेत्रों में देशांतरण के इच्छुक नागरिकों का पंजीकरण अनिवार्य बना दिया गया। इसके एक वर्ष बाद लागू होने वाले दूसरे चरण में एक नई परमिट प्रणाली को लागू करने का प्रावधान किया गया जिसका प्रतिवर्ष पुनरीक्षण अनिवार्य था। तीसरे चरण में पासपोर्ट प्रणाली लागू करने का प्रावधान किया गया। आयोग ने भारत-नेपाल शांति एवं मित्रता संधि की आलोचना करते हुए कहा कि भारत का नेपाल के प्रति दृष्टिकोण सही नहीं कहा जा सकता है तथा नेपाल में दक्ष भारतीयों की नियुक्ति के कारण नेपाल में दक्षता उन्नयन कार्यक्रमों पर दुष्प्रभाव पड़े हैं।

अवैध व्यापारों के संबंध में 1985 में दोनों देशों के एक संयुक्त निरीक्षण दल का गठन कर विभिन्न कारकों का अध्ययन करना आरंभ किया। 1985-87 में संबंधों में पुन: कटुता आ गई जिसका प्रमुख कारण श्रीलंका में की जा रही भारतीय कार्यवाही तथा मेघालय के नेपालियों का विस्थापन था, लेकिन आर्थिक संबंध यथावत बने रहे। वस्तुत: जून, 1987 में एक संयुक्त आयोग का गठन कर विकासोन्मुखी कार्यक्रमों को दिशा देने की कोशिश की गई। 1990 के दशक में जब पंचायत को समाप्त कर संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना की गई तब द्विपक्षीय संबंधों की सुदृढ़ता के प्रति आशान्वित होना स्वाभाविक था। इसके अनुरूप द्विपक्षीय यात्राओं में वृद्धि कर नई संधियाँ की गईं तथा संबंधों को नई दिशा देने का प्रयास किए गए। 1994 में मनमोहन अधिकारी के नेतृत्व वाली नेपाल सरकार ने कई मुद्दों को उभारकर संबंधों को बेहतर बनाना चाहा। इनमें 1950 की संधि का पुनरीक्षण, टनकपुर संधि पर दुबारा चर्चा तथा शरणार्थियों की समस्या का समाधान शामिल था।, लेकिन 1996 के बाद माओवादी आंदोलन के जोर पकड़ने तथा नेपाल में राजनीतिक अस्थायित्व के कारण संबंधों में अपेक्षित सुधार नहीं हो पाया।

यहाँ द्विपक्षीय संबंधों में हाल की प्रवृत्तियों पर चर्चा करें तो यह कहना उचित होगा कि नेपाल के गणतंत्र बनने तथा 28 अप्रैल, 2008 को माओवादी नेता प्रचंड द्वारा 1950 की संधि को एक नई संधि से प्रतिस्थापित करने के प्रस्ताव के बाद भारत पुन: एक नई नेपाल नीति की आवश्यकता हो गई है। यह आशा की जा सकती है कि चूंकि भारत सदैव लोकतंत्र का समर्थक रहा है, अत: नेपाल में लोकतंत्र की बहाली से भारत-नेपाल संबंधों में सुधार होंगे, लेकिन यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि नेपाल में माओवादियों के राजनीतिकरण तथा उसके बाद लोकतांत्रिकरण से भारत में माओवादियों की सक्रियता बढ़ सकती है।

यह सत्य है कि नेपाल की दृष्टि से भारत आज भी अत्यन्त महत्वपूर्ण देश है, अत: भारत के साथ सुदृढ़ संबंधों की स्थापना नेपाल के लिए अनिवार्य है। यहां नेपाल के माओवादी नेता प्रचण्ड का कथन उल्लेखनीय है, जिसके अनुसार, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीति अथवा सुरक्षात्मक, सभी दृष्टिकोणों से नेपाल की पुनर्संरचना के लिए भारत का सहयोग अनिवार्य होगा।

नई चुनौतियाँ-

नेपाल में हुए नाटकीय राजनीतिक घटनाक्रमों तथा नेपाल के परिसंघीय गणराज्य की स्थापना के बाद भारत की नई नेपाल नीति के समक्ष महत्वपूर्ण चुनौतियाँ उत्पन्न हो गई हैं। सबसे पहले 1950 की शांति एवं मित्रता संधि के बदले एक नई संधि के प्रारूप का निर्धारण दोनों देशों के लिए महत्वपूर्ण है ताकि बदलते परिवेश में संबंधों को नई दिशा दी जा सके। नेपाल में

भारतीय निवेश को बढ़ावा देने के लिए यह आवश्यक होगा कि विभेदीकरण का प्रतिषेध करने वाली नीति का पालन किया जाए। उल्लेखनीय है कि नेपाल में अवसंरचनात्मक विकास के लिए पर्याप्त निवेश की आवश्यकता है इसमें सड़क तथा विमानपत्तनों के अतिरिक्त जल विद्युत का क्षेत्र महत्वपूर्ण है। हाल के वर्षों में भारत की सुरक्षा आवश्यकताओं में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए हैं। परंपरागत सैन्य सुरक्षा के साथ-साथ अब मादक द्रव्यों की तस्करी, लघु अस्त्रों के अवैध व्यापार तथा मानव दुर्व्यापार की समस्याओं से सुरक्षा के स्वरूप में बदलाव हो गया है। ऐसी स्थिति में भारत-नेपाल मुक्त सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना अनिवार्य हो गया है। साथ ही, दोनों देशों के बीच अधिसूचना प्रणाली की सुदृढ़ता भी अनिवार्य हो गई है। अब चूंकि भारत नेपाल के माओवादियों को वैधानिकता प्रदान कर दी है, अत: दोनों ओर से आपसी शंकाओं को दूर कर राजनीतिक विश्वास बहाली एक बड़ी चुनौती है।

नेपाल की पुनर्संरचना-

एक दशक के गृह युद्ध के बाद नेपाल के माओवादियों के नेतृत्व में जिस गणराज्यीय व्यवस्था की स्थापना की गई है उसके आलोक में राष्ट्र की पुनर्संरचना की अनिवार्यता उत्पन्न हो गई है। लगभग सभी राजनीतिक दलों और संस्थाओं ने आम सहमति से एक परिसंघीय ढाँचे के निर्माण की कवायद आरंभ कर दी है, लेकिन यह विचारणीय है कि परिसंघीय ढाँचा कैसा हो?

सामान्यत: परिसंघीय ढाँचे में केन्द्र और क्षेत्रीय सरकारों के बीच संप्रभुता की साझेदारी होती है ताकि एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं हो तथा दोनों सरकारें स्वतंत्र रूप से कार्य करती रहें। परिसंघ का निर्माण या तो विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया के आधार पर होता है, जिसमें एक एकात्मक प्रवृति वाले राज्य में कई स्वायत्त क्षेत्रीय सरकारों का गठन किया जाता है या केन्द्रीकरण की प्रक्रिया के तहत जिसमें राज्यों के बीच समझौते के आधार पर एक संघीय सरकार का गठन होता है। दूसरी ओर, शक्तियों के विभाजन के आधार पर भी परिसंघीय व्यवस्था बनाई जा सकती है। इस अधिकार पर वित्त और अवशिष्ट शक्तियाँ या तो राज्यों में निहित होती है या केन्द्र सरकार में।

जहाँ तक नेपाल के प्रस्तावित परिसंघीय ढाँचे की बात है, दो संकल्पनाओं पर विचार किया जा रहा है। पहली संकल्पना में नृजातीयता के आधार पर जबकि दूसरी संकल्पना में भौगोलिक आधारों पर ऐसे ढाँचे के निर्माण का प्रस्ताव किया गया है। 2001 की जनगणना के आधार पर नेपाल में लगभग 100 नृजातीय समूह निवास करते हैं।, लेकिन नेपाल की राजनीतिक प्रणाली में लोकतांत्रिकरण होने के बावजूद कुछ उच्च वर्गीय नृजातीय समूहों जैसे, ब्राह्मेण, नेवार तथा क्षेत्री में ही राजनीति शक्ति का संकेन्द्रण रहा है। ऐसे में यदि इस आधार पर परिसंघ का निर्माण होता है तो यह आशंका रहेगी कि उच्च और निम्न वर्ग की खाई चौड़ी हो सकती है जो राष्ट्रीय अखंडता की दृष्टि से उचित नहीं होगा। दूसरी ओर, यदि भौगोलिक आधारों पर क्षेत्रीय वर्गीकरण किया जाता है तो इसमें नृजातीय समुदायों का महत्व कम होगा तथा यह प्रयास किया जा सकता है कि ऐसे सभी समुदायों को राजनीतिक प्रणाली में पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया जाए। इस आधार पर यह संकल्पना अपेक्षाकृत अधिक तार्किक प्रतीत होती है। हाल ही में गठित संविधान सभा ने यह स्पष्ट कहा कि वह एक नए परिसंघीय ढाँचे के निर्माण पर विचार कर रही है, लेकिन इतना अवश्य है कि सभी राजनीतिक दलों के बीच ऐसे विषय पर आम राय बननी चाहिए ताकि किसी प्रकार का विरोध उत्पन्न न हो।

संदर्भ:-

1. एचिसन, सी.यू., ए कलेक्शन ऑफ ट्रीटिज, इंगेजमेंट्स एंड सनदस रिलेटिंग टू इंडिया एंड इट्स नेबरिंग कन्ट्रीज, 2 वाल्यूम, कोलकाता, 1906
2. एटकिंसन, एडविन टी., द हिमालयन डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ द नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सेज ऑफ इंडिया, इलाहाबाद. 1982
3. चौधरी, के.सी., एंग्लो नेपालीज रिलेशन्स, कोलकाता 1960
4. धनलक्ष्मी, राबुरी, ब्रिटिश एटीट्यूड टू नेपाल्स रिलेशन्स विथ तिब्बत एंड चाइना, नई दिल्ली
5. हामाल, लक्ष्मण बी, इकोनामिक हिस्ट्री ऑफ नेपाल, वाराणसी 1994
6. हैमिल्टन, फ्रांसिस बुचानन ऐन एकाउन्ट ऑफ द किंगडम ऑफ नेपाल, एडिनबर्ग, 1819, रीप्रिन्ट नई दिल्ली 1971
7. जैन, एम.एस, द इमर्जेंस ऑफ ए न्यू अरिस्टोक्रेसी इन नेपाल, आगरा 1972
8. खत्री, टेक बहादुर, नेपाल: ए ग्लिम्प्स, काठमांडू 1964
9. रेग्मी, डी.आर, ए सेन्चुरी ऑफ फैमिली आटोक्रेसी इन नेपाल, काठमांडू 1958
10. रोज, लियो ई., नेपाल स्ट्रेटजी फार सरवाइवल, आक्सफोर्ड प्रेस, मुम्बई 1971
11. सनवाल, बी.डी., नेपाल एंड द ईस्ट इंडिया कम्पनी, मुम्बई 1965
12. सेन, जहार, इण्डो नेपाल ट्रेड इन द नाइनटींथ सेंचुरी, कोलकाता 1977
13. शाह, रिशीकेश, माडर्न नेपाल ए पोलिटिकल हिस्ट्री 1769-1955, नई दिल्ली 1998
14. पाण्डे, राजनाथ, नैपाल और नैपाल नरेश, पटना 1964
15. मिश्रा, बलदेव, नेपाल का इतिहास, 1904
16. सक्सेना, शंकर सहाय, नेपाल: अतीत और वर्तमान, बीकानेर
17. श्रीवास्तव, काशी प्रसाद, नेपाल का इतिहास, दिल्ली
18. रिजवी, एस.एन.आर., नेपाल का इतिहास 1742-1846, नई दिल्ली, 2012

◆◆◆